30 वीं वर्षगाँठ 1985 2015

१९८५-२०१५ विशिष्ठ वर्षगाँठ प्रकाशन

नीबूवर्गीय फल समाचार पत्र

आई.एस.ओ. 9001 : 2008 प्रमाणित संस्थान

भा.कृ.अनु.प.-केन्द्रीय नीबूवर्गीय फल अनुसंधान संस्थान, नागपुर

खण्ड–3 क्रमांक–1 जनवरी–मार्च, 2016

विषय सूची

- भा.कृ.अनु.प. के नये महानिदेशक डॉ. त्रिलोचन महापात्र 1
- निदेशक की कलम से....... 2
- नीबूवर्गीय फल क्षेत्र से....... 2
- संस्थान से 2
- सुझाव/प्रतिसूचना 8

डॉ. त्रिलोचन महापात्र भा.कृ.अनु.प. के नये महानिदेशक

डॉ. त्रिलोचन महापात्र का जन्म 20 अप्रैल 1962 को ग्राम खैरीबिल, जिला कटक, ओडिशा में हुआ और आपने बी.एस.सी. (कृषि) ओडीसा कृषि विश्वविद्यालय भुवनेश्वर से किया। एम. एससी. (अनुवंशिकी) वर्ष 1987 में भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली तथा पी. एच.डी. वर्ष 1992 में भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान नई दिल्ली से किया। वर्तमान में सचिव, कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा तथा महानिदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली में पदस्थ हैं। इसके पहले आपने ख्याति प्राप्त भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान नई दिल्ली के निदेशक और राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान (पूर्व नाम केन्द्रीय चावल अनु. संस्थान) कटक, ओडीसा के निदेशक के रूप में तथा आपने 20 वर्षो तक अनुसंधानकर्ता एवं शिक्षक के रूप में राष्ट्रीय पादप जैव तकनीकी अनुसंधान केन्द्र, भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान नई दिल्ली में काम किया। आपका अनुसंधान विशेषज्ञ का क्षेत्र मॉलीक्यूलर जेनेटिक्स एवं जीनोमीक्स है।

डॉ. महापात्र के 150 से अधिक अनुसंधान पत्र विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त पत्रिकाओं में तथा कई बुक चैप्टर प्रकाशित हो चुके हैं।

आपके अनुसंधान में अधिक उपज वाली बासमती चावल की किस्म जो बैक्टीरियल लीफ ब्लाइट के प्रति प्रतिरोधी जो आनिविक मार्कर विधि द्वारा चयनित है और चावल एवं टमाटर की फिजीकल मैपींग एवं जीन सीक्वेसिंग शामिल है। आपके अनुसंधान के योगदान को सराहा गया है जिसमें उच्च इंडेक्स एवं आई 10 शामिल है। आपके उत्कृष्ठ शैक्षणिक एवं अनुसंधान में कई सम्मान एवं पुरस्कार शामिल है जिनमें प्रमुख इन्सा यंग साइंटिस्ट पुरस्कार, प्रो. एल.एस.एस.कुमार मेमोरियल पुरस्कार, नास–टाटा पुरस्कार, आई.ए.आर. आई. – बी.पी. पाल पुरस्कार, डी.बी.टी. बायो साईन्स पुरस्कार और नासी रिलाएन्स इंडस्ट्रीज प्लेटीनम जुबली पुरस्कार प्रमुख है। आपके उत्कृष्ठ अनुसंधान कार्य के लिए भारतीय कृषि अनुसंधान अकादमी द्वारा वर्ष 2013–14 का पौध सुधार क्षेत्र में द्विवार्षिक मान्यता पुरस्कार प्राप्त हुआ एवं पौध अनुवांशिकी में उत्कृष्ट योगदान के लिए भारतीय आनुवंशिकी कांग्रेस द्वारा जीवन गौरव सम्मान से पुरस्कृत किया गया।

डॉ. महापात्र भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी, नई दिल्ली, राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी – भारत, इलाहाबाद एवं राष्ट्रीय कृषि विज्ञान अकादमी, नई दिल्ली के सम्मानित फेलो रह चुके है।

आपके महानिदेशक चुने जाने पर भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय नीबूवर्गीय फल अनुसंधान संस्थान, नागपुर के समस्त कर्मचारी गण काफी प्रसन्न हैं और आपके भा.कृ.अनु.प. के महानिदेशक एवं सचिव, कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग के सचिव होने पर गौरव महसूस करते हैं। आपके नेतृत्व में नीबूवर्गीय फल उद्योग एवं इससे जुड़े समस्त संबंधित लोग कृषि क्षेत्र में विशेषतया नीबूवर्गीय फलों के अनुसंधान एवं विकास को आने वाले समय में उँचाई पर ले जायेंगे।

निदेशक की कलम से ....

प्रिय पाठकों,

प्रसंस्करण हेतु नीबूवर्गीय फलों की किस्में इस उद्योग के लिए सदैव एक महत्वपूर्ण विषय रही है। कंपनीयों की जरूरत है की गुणवत्तायुक्त लगातार फलोत्पादन वाली किस्में उन्हें मिलती रहें। आवश्यकता है की संतरे में एक समान रंग, घुलनशील ठोसः अम्लीयता अनुपात 13–14 के बीच तथा कुल रस 40 प्रतिशत से अधिक हो और पूरे वर्ष तक इन फलों की उपलब्धता बनी रहे। इन जरूरतों को उत्पादन स्तर से पूरा करना होगा और उसके लिए फलों की गुणवत्ता को ध्यान में रखकर वर्षो तक जारी रखना होगा। भारत की परिस्थितियों में किसानों के समूह बनाने होंगे और विकसित कृषि तकनीकीयों को अपनाना होगा। उन्नत तकनीकीयाँ समय समय पर वैज्ञानिकों, प्रसारकर्ताओं एवं राज्य सरकार के कृषि विभाग के मार्गदर्शन से होना चाहिए। मोसम्बी के लिए भारतीय किस्में जैसे सथगुडी, मोसम्बी या वैलेंसिया, ब्राजीलीयन किस्में जैसे पेरा या नटाल भविष्य में एक विकल्प हो सकते है। संतरे में नागपुर और खासी संतरो को प्रसंस्कृत किया जा सकता है क्योंकि इनमें कड़वाहट किन्नो की तुलना में कम पाई जाती है। नीबू की किस्मों में अधिकांशतः साई शरबती, प्रमालीनी, जयदेवी एवं एनआरसीसी नीबू –7 एवं 8 रस की आवश्यकता को पूरा कर सकते हैं। ये फसले अधिक क्षेत्रफल कवर कर सकती हैं और अनुबंध खेती के रूप में वापस खरीदने की व्यवस्था में उगाई जा सकती है।

प्रसंस्कृत गुणवत्ता युक्त कंपनीयाँ सही दाम सुनिश्चित कर सकती है साथ ही अच्छे उत्पादन हेतू तकनीकी एवं अन्य आवश्यकतायें जैसे कीटनाशक, उर्वरक इत्यादि को समझौता के आधार पर उपलब्ध कराया जा सकती है।

नीबूवर्गीय फल क्षेत्र से

देश में कुछ बहुराष्ट्रीय कंपनीयों जैसे पेप्सी एवं कोकाकोला के प्रसंस्करण क्षेत्र में आने से नीबूवर्गीय फल क्षेत्र को एक बड़ा उछाल एवं बढ़ावा मिल सकता है। भारत सरकार का यह प्रयास है कि भारतीय बाजारो में उपलब्ध कार्बनीकृत पेय पदार्थो जिनमें कुछ सुगंध से पूर्ण पदार्थ की विक्री हो रही है उनमें कुछ अन्य फलों के रस एवं नीबूवर्गीय फलों के रस 5–10% तक मिलाये जा सके। यह न केवल उत्पाद की गुणवत्ता को सुधारता है बल्कि सी एवं डी ग्रेड के फलों का प्रसंस्करण में उपयोग होता है जबकि ऐसे फलों की बाजार में बहुत कम कीमत मिलती है। ऐसे फलों से उत्पादकों को अच्छी आय होगी और क्षति कम हो जायेगी जिसके लिए विनियमन में कुछ बदलाव आवश्यक है। उद्योग क्षेत्र में छोटे फलों के ढेर से अच्छी गुणवत्तायुक्त फलों को अलग करना होगा। यह मोसम्बी (सथगुडी एवं मोसम्बी) संतरे (नागपुरी संतरा) एवं नीबू में संभव है।

संस्थान से

अनुसंधान उपलब्धीयाँ

जैव नियंत्रक–ट्राईकोडर्मा हर्जीयेनम स्ट्रेन एन.आर.सी.एफ.बी.ए.–44

ट्राईकोडर्मा कवकों की श्रेणी में आनेवाली जीनोम है जो कि प्राकृतिक रूप से मिट्टी द्वारा पैदा होनेवाली पौध बीमारियों को नियंत्रित करता है। मध्य भारत में नीबूवर्गीय फलों की फाईटोफ्थोरा जनित जड़सड़न बीमारी को क्षेत्रीय ट्राईकोडर्मा हर्जीयेनम एन.आर.सी.एफ.बी.ए.–44 नियंत्रित करने में सहायक है। साथ ही पौधों कि वृध्दि को भी बढ़ाता है। इस पाऊडर आधारित ट्राईकोडर्मा उत्पाद को केंद्रीय नीबूवर्गीय फल अनुसंधान संस्थान, नागपुर में विकसित किया गया है। इसके पौधशाला एवं उद्यान में अच्छे परिणाम मिल रहे है। पाउडर आधारित इस उत्पाद में कम से कम 10^7 सी.एफ.यू./प्रतिग्राम अंश मौजूद है। साथ ही इसे 6 महीने तक इसकी गुणवत्ता को खोये बिना भंडारित किया जा सकता है। इसके प्रयोग में प्रमुख सुचनाए निम्न लिखित हैं।

प्रयोग की मात्रा– बड़े वृक्षों हेतु इसकी 100 ग्राम मात्रा को 1 किग्रा गोबर की खाद के साथ तथा 20 ग्राम मात्रा प्रति 2 लीटर क्षमता के बैग को पौधशाला हेतु संस्तुत किया गया है।

नोट– इस मिश्रण का तने से 1–2 फीट दूरी पर प्रयोग करना चाहिए और मृदा में जड़ को क्षति किए बिना मिला देना चाहिए। मृदा में नमी न होने की स्थिति में हल्की सिंचाई करनी चाहिए।

उपयोग का समय– वर्ष में इसका दो बार प्रयोग करना चाहिए पहला मानसून के प्रारंभ (जून–जुलाई) में और दूसरा मानसून के बाद (सितंबर–अक्टूबर) में होना चाहिए। ट्राईकोडर्मा का प्रयोग शुरू के 3–4 साल में करना चाहिए जिससे मृदा में बिमारी नियंत्रण हेतु समुचित संख्या हो सके।

संस्थान की गतिविधीयाँ/आयोजित कार्यक्रम

प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजित

संस्थान में

- उद्यान निदेशालय, मिजोरम द्वारा प्रायोजित एक तीन दिवसीय "उत्तर पूर्वी राज्यों में नीबूवर्गीय फलोद्यानों का प्रबंधन" प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन खासी संतरा उत्पादकों हेतु संस्थान में 11–13 जनवरी 2016 को किया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. विनोद अनाव्रत, प्रधान वैज्ञानिक (प्रसार) थे।

अन्य परिसर से

- "संतरा पर राष्ट्रीय कार्यशाला" का आयोजन राजस्थान राज्य संस्थान के

संस्थान के निदेशक डॉ. एम.एस. लदानिया मिजोरम के प्रशिक्षुओं को प्रमाण पत्र देते हुए।

कृषि प्रबंधन जयपुर द्वारा झालावाड में 1 से 3 फरवरी 2016 को किया गया। संतरे की बागवानी में सुधारित तरीकों, नीबूवर्गीय फलों में फफूंदी, जीवाणु एवं विषाणु रोगों तथा मूल्यवर्धित प्रारूप पर डा. ए.डी.हुच्चे, प्रधान वैज्ञानिक (उद्यानिकी), डॉ. ए.के. दास, प्रधान वैज्ञानिक (पौधा रोग विज्ञान) एवं श्री. डी.ओ. गर्ग, एस.एम.एस.(कीट विज्ञान) टी.एम.सी. ने व्याख्यान दिया।

जनजातीय उप योजना

- भा.कृ.अनु.प.– केंद्रीय नीबूवर्गीय फल अनुसंधान संस्थान ने भा.कृ.अनु.प.– उत्तर पूर्वी, पर्वतीय क्षेत्र अनुसंधान परिसर, नागालैण्ड केन्द्र के सहयोग से जनजातीय उप योजना के तहत हाल में ही विकसित खासी संतरे के उत्पादन प्रौद्यागिकी पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन नागालैण्ड केन्द्र, झरनापानी, मेडजिफेमा में 8 से 10 फरवरी 2016 के दौरान किया गया। राज्य बागवानी विभाग, मृदा और जल संरक्षण विभाग, विश्वविद्यालयों एवं भा.कृ.अनु.प. के कृषि विज्ञान केन्द्र से 50 अधिकारियों ने इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया। डा. आई.पी.सिंह, प्रधान वैज्ञानिक (उद्यानिकी) और डॉ. डी.के.घोष, प्रधान वैज्ञानिक (पौधा रोग विज्ञान) इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के संसाधन विशेषज्ञ थे।

जनजातीय उपयोजना के प्रशिक्षण में नागालैंड झरनापानी के प्रतिभागी

- जनजातीय उप योजना के तहत कृषक प्रशिक्षण का आयोजन 28 से 30 मार्च 2016 के दौरान पारालाखेमुंडी, जिला गजपति, उड़ीसा में किया गया। नीबूवर्गीय फलों की बागवानी करने वाले सत्तर से ज्यादा जनजातीय लोगों (सात महिलायें सहित) ने इसमें भाग लिया। इस कार्यक्रम मे श्री साहू, उप निदेशक (उद्यानिकी), श्री प्रभात पात्रो, सहायक बागवानी अधिकारी और श्रीमती ऐश्वर्या पांडा, बागवानी अधिकारी, उड़ीसा राज्य बागवानी विभाग भी उपस्थित थे। नीबूवर्गीय फलों की खेती के विभिन्न विषयों पर डा. ए.डी. हुच्चे, प्रधान वैज्ञानिक, (उद्यानिकी), डा. ए.के.दास, प्रधान वैज्ञानिक, (पौधा रोग विज्ञान) और श्री. डी.ओ. गर्ग, एस.एम.एस. (कीट विज्ञान), टी.एम.सी. ने व्याख्यान दिया तथा किसानों को सलाह दी।

डॉ. ए. डी. हुच्चे प्रधान वैज्ञानिक (उद्या.) परलेखीमुंडी, जिला गजपति ओडिसा के प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित करते हुए

समझौता पत्र : संस्थान के वैज्ञानिको द्वारा एम.एस.सी. एवं पी.एच.डी. विद्यार्थीयों को मार्गदर्शन हेतु बांदा कृषि विश्वविद्यालय एवं प्रौद्योगिकी बांदा, उ. प्र. और भा.कृ.अनु.प.– केंद्रीय नीबूवर्गीय फल अनुसंधान संस्थान, नागपुर के बीच द्विपक्षीय समझौता पत्र पर हस्ताक्षर 18 मार्च 2016 को हुआ।

आयोजित बैठकें

- केंद्रीय नीबूवर्गीय फल अनुसंधान संस्थान, नागपुर की 32 वीं संस्थान प्रबंधन समिति (आई.एम.सी.) की बैठक 14 मार्च 2016 को डा. एम.एस. लदानिया, निदेशक की अध्यक्षता में हुई। उपस्थित सदस्यों में श्री. सुनील एस.शिंदे, पूर्व विधायक, सावरगॉव नागपुर, डॉ. ए.के.श्रीवास्तव, प्रधान वैज्ञानिक (मृदा विज्ञान), सी.सी.आर.आई. नागपुर, डॉ. नाचीकेत कोतवालीवाले, प्रधान वैज्ञानिक (ए.एस.एवं पी.ई.) सी.आई.ए.आई., भोपाल श्री. वाई. वी. सोरते, ए.एफ. एवं ए.ओ. सी.सी.आर.आई. और सदस्य सचिव श्री. एस.एम. सहारे, वरिष्ठ ए.ओ., के.नी.फ.अनु.सं. नागपुर थे।

  बैठक शुरू होने से पहले संस्थान प्रबंधन समिती के सदस्यों ने नई प्रयोगात्मक प्रखंडो का दौरा किया जहा संतरे, मौसंबी नीबू और ग्रेपफ्रूट नई प्रजातियों को ऊँचे मेढ़ (क्यारी) पर लगाया गया है जिसका मूल्यांकन उर्वरक (फर्टिगेशन) के साथ किया जा रहा है। आई.एम.सी. ने उस ब्लॉक का भी दौरा किया जहा एन.एच.बी. वित्त पोषित परियोजना के तहत यंत्रीकृत छँटाई और आयातित मशीनरी के साथ स्वचालित छिड़काव का प्रदर्शन किया गया। नागपुरी संतरा फल विकार (स्थानीय भाषा में वॉयवार) पर हो रहे अनुसंधान कार्य एवं इसके प्रबंधन की जानकारी दी गई।

संस्थान की प्रबंध समिति की 32 वी बैठक

प्रबंध समित के सदस्यों को मशीनीकृत छटाई मशीन का प्रदर्शन दिखाया गया

- **राजभाषा की बैठक:** डा. एम.एस.लदानिया, निदेशक, भा.कृ.अनु.प के नीबूवर्गीय फल अनुसंधान संस्थान, नागपुर की अध्यक्षता में राजभाषा की बैठक 16 मार्च 2016 को संपन्न हुई।

पुरस्कार, सम्मान एवं मान्यता

- डा. किरण पी. भगत वैज्ञानिक (पौध कार्यिकी विज्ञान) ने अपने शोधपत्र के लिए सबसे अच्छा मौखिख प्रस्तुति पुरस्कार पाया जिसका शिर्षक "फिजियोलोजिकल एंड इल्ट रिस्पोन्स टू फोटोसिंथेटिकली ऍक्टीव रेडीएशन एंड मोईश्चर स्ट्रेस इन सोयाबिन (ग्लाइसीन मेक्स एल) फिनोटाईप अंडर क्लाईमेट चेंज सिनेरियो" को राष्ट्रीय सेमिनार "ब्रीडींग ऑफ फिल्ड क्रॉप फॉर बायोटिक एवं एबायोटिक स्ट्रेस इन रिलेशन टू क्लाईमेट चेंज" जो 28 से 29 मार्च 2016 को ब.ना.म.कृ.वी. परभनी में संपन्न हुआ।

विशिष्ट आगंतुक

- डा. राजेश कपूर, सलाहकार, डी. बी. टी. ने संस्थान का 20 जनवरी, 2016 को दौरा किया तथा नीबूवर्गीय फलों के शून्य अपशिष्ट प्रसंस्करण पर आंतर मंत्रालयी कार्यक्रम में विकास हेतु परस्पर चर्चा की।

डॉ. राजेश कपूर, सलाहकार, डी.बी.टी. ने संस्थान की सस्योत्तर प्रयोगशाला को भेट दी

- डा. डी.के. जैन, अपर मुख्य सचिव (कृषि), महाराष्ट्र सरकार, मंत्रालय, मुंबई ने 19 फरवरी 2016 को संस्थान का दौरा किया।

डॉ. डी. के जैन, अतिरिक्त प्रमुख सचिव (कृषि) के साथ संस्थान के निदेशक डॉ. एम. एस. लदानिया विचार विर्मश करते हुए

प्रशिक्षण एवं क्षमता निर्माण

- श्री. संतोष खैरे (तकनीकी सहायक) ने "पानी की गुणवत्ता परीक्षण के उन्नत उपकरणों की उपयोगिता" प्रशिक्षण कार्यक्रम में 11 से 15 जनवरी 2016, एन.आई.एच., रूडकी, उत्तराखण्ड में भाग लिया।
- डा. आर.के. सोनकर, प्रधान वैज्ञानिक (बागवानी) ने कार्यक्रम "खरपतवार प्रबंधन के क्षेत्र में प्रगति" प्रशिक्षण भा.कृ.अनु.प–खरपतवार अनुसंधान निदेशालय, जबलपुर में 12–21 जनवरी, 2016 को भाग लिया।
- डा. सी.एन. राव प्रधान वैज्ञानिक (कीटक विज्ञान) "मानव संसाधन विकास नोडल अधिकारियों के लिए योग्यता विकास" प्रशिक्षण कार्यक्रम 10 से 12 फरवरी 2016, भा.कृ.अनु.प–नार्म, हैदराबाद में सम्मिलित हुए।
- श्री बलजीत सिंह, मुख्य तकनिकी अधिकारी, (प्रक्षेत्र/फार्म), श्री. वी.पी. भालाधरे, वरिष्ठ तकनीकी सहायक, श्री. बी. जी. अवारी वरिष्ठ तकनीकी सहायक (प्रक्षेत्र/फार्म), श्री. के. के. घायवट, तकनीकी सहायक (प्रक्षेत्र/फार्म) ने नीबूवर्गीय फलों की पौधशाला, खेती, जीर्णोद्वार एवं तुड़ाई उपरांत रखरखाव पर 14 से 17 मार्च 2016 तक प्रशिक्षण कार्यक्रम टी.एम.सी. विदर्भ नागपुर में हिस्सा लिया।
- डा. ए. ए. मुरकुटे, वरिष्ठ वैज्ञानिक (बागवानी) ने पी.पी.वी. एवं एफ.आर.ए और एम.जी.एम.जी उपक्रम के नोडल अधिकारियों के साथ परस्पर विचार विमर्श में जागरूकता सहप्रशिक्षण कार्यक्रम के तहत भा.कृ.अनु.प–ए.टी.ए.आर.आई, क्रीडा हैदराबाद में 28 मार्च 2016 को सम्मिलित हुए।

संपर्क एवं सर्वेक्षण

- नीबूवर्गीय फलों की बागवानी करने वाले किसानों के लिए महाराष्ट्र कृषि विभाग द्वारा मौसम आधारित फसल बीमा योजना के लिए संशोधित मानदंडों को निदेशक (बागवानी), महाराष्ट्र को सौपा गया।
- केंद्रीय नीबूवर्गीय फल अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिक और राज्य अधिकारियों ने 29 फरवरी 2016 को बेमौसम बारीश और ओलावृष्टि के कारण हुए नुकसान के लिए नागपुर में सर्वेक्षण किया।

अन्य संगठनों में दिये गए व्याख्यान–

- आर.के. सोनकर (2016). "नीबूवर्गीय फलों की खेती में मूलवृत्तों की भूमिका, राज्य स्तर के नीबूवर्गीय फल प्रदर्शनी के दौरान, 2 से 3 जनवरी 2016, निदेशक बागवानी मिशन, उत्तराखण्ड द्वारा आयोजित।
- ए.के.दास (2016). "नीबूवर्गीय फलों एवं संतरे के बीमारियों का प्रबंधन" संतरे पर कार्यशाला के दौरान, 1–3 फरवरी 2016, झालावार, राजस्थान में, एस.आई.ए.एम, जयपुर, राजस्थान द्वारा आयोजित।
- दिनेश कुमार (2016). "नीबूवर्गीय फलों की तुड़ाई उपरान्त प्रबंधन एवं निर्यात की संभावना" संतरे पर कार्यशाला के दौरान 1–3 फरवरी 2016, झालावार, राजस्थान।
- ए.ए.मुरकुटे (2016). "प्याज एवं लहसुन की खेती" लिमदेव पाटिल कॉलेज, ग्राम मंडाल, तालुका कुही, 19 फरवरी 2016।
- आई.पी.सिंह (2016). डी.यू.एस.प्रलेखन, नीबूवर्गीय फलों के लिए परिक्षण एवं लेखन, तकनीकी सत्र –III, 10 वी. डी.यू.एस., पी.पी.वी.एवं एफ.आर.ए. की समीक्षा बैठक, एम.पी.के.वी, राहुरी, 26–27 फरवरी 2016।
- ए.के.दास (2016). "नीबूवर्गीय फलों में रोग प्रबंधन" सी.आई.पी.एम.सी के प्रशिक्षुओ को, 3 मार्च 2016, नागपुर।
- डी.के.घोष (2016). नीबूवर्गीय फलो को ग्रसित करने वाले विषाणु एवं विषाणु सदृश्य रोगों का एकीकृत प्रबंधन, सिट्रीकल्चर प्रशिक्षण के दौरान, डा. पी.डी.के.वी. अकोला द्वारा 15–19 मार्च 2016 को आयोजित।
- ए.डी. हुच्चे (2016). जलवायु अनुरूप नीबूवर्गीय फलों की उत्पादन प्रौद्योगिकी कार्यशाला के दौरान , 16 मार्च 2016, डा. पी.डी.के.वी. अकोला, महाराष्ट्र।
- पी.एस.शिरगुरे (2016). "नीबूवर्गीय फलो की खेती में प्रगति एवं सिंचाई प्रबंधन तकनीक 17 मार्च, 2016 डा. पी.डी.के.वी. अकोला में प्रशिक्षण के दौरान जो कि संयुक्त रूप से बी.एन.सी.बी.टी. यवतमाल एवं आई.टी.आर.ए., नई दिल्ली द्वारा आयोजित की गई।

शोध पत्र/कार्यवाही सार/सेमीनार की स्मारिका/संगोष्ठी/सम्मेलन

- दिनेश कुमार; एल.राम; एस. कुमार और ए.खडसे (2016) : नीबू से आवश्यक तेलों एवं सुगंध का सुपरक्रिटिकल कार्बनडाईआक्साइड़ द्वारा निष्कर्षण। स्मारिका– उपोष्णकटिबंधीय और पहाड़ी क्षेत्र में बागवानी के एकीकृत विकास पर राष्ट्रीय संगोष्ठी, 17–19 फरवरी,2016 पृष्ठ क्रमांक 232–239।
- लदानिया, एम.एस और कुमार डी. (2016) जलवायु परिवर्तन से आहत कृषक समुदाय को सशक्त बनाने के लिए फसल तुड़ाई के बाद प्रबंधन और मूल्य संवर्धन का महत्व। स्मारिका– वैश्विक जलवायु विघटन के युग में खाद्य और पोषण सुरक्षा पर राष्ट्रीय संगोष्ठी, 4–6 मार्च, 2016 इम्फाल, मनीपुर पृष्ठ क्रमांक 238–245।
- सोनकर, आर. के. (2016). नीबूवर्गीय फलों की बागवानी में मूलवृन्तों की भूमिका (हिन्दी)। स्मारिका– राज्य स्तर पर नीबूवर्गीय फल त्यौहार, किसान भवन, देहरादून, पृष्ठ कमांक 15–19।

सेमीनार/संगोष्ठियों/सम्मेलनों में मौखिक शोध पत्र प्रस्तुति

- भगत, किरण. पी., बाल, एस. के., मिनहास. पी.एस., सिंह योगेश्वर, पासाला रतनकुमार और साहा सूनयन (2016). जलवायु परिवर्तन परिदृश्य के तहत सोयाबीन (ग्लायसीन मैक्स एम.) जीनोटाइप में कृत्रिम प्रकाश सक्रिय विकिरण और नमी तनाव का पौधे एवं फलोत्पादन पर प्रभाव। जलवायु परिवर्तन के कारण जैविक एवं अजैविक तनाव के विरूद्ध फसलों के प्रजनन पर राष्ट्रीय संगोष्ठी, 28–29 मार्च, 2016।
- दास, ए.के. (2016). नीबूवर्गीय फलों में एकीकृत हानिकारक कीट प्रबंधन पैकेजेस, मुख्य फसलों के आई.पी.एम पर विचार मंथन, भा.कृ.अनु.प – एन. सी.आई.पी.एम, नई दिल्ली, 16–17 फरवरी 2016।
- घोष, डी.के. (2016). नीबूवर्गीय फलों की फाइटोप्लाजमा रोगः वर्तमान परिदृश्य और भावी अनुसंधान, पौधा रोग विज्ञान पर छटवा अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन, 23–27 फरवरी, 2016 नई दिल्ली।
- हुच्चे, ए.डी. (2016). जलवायु परिवर्तन और नीबूवर्गीय फल–एक व्यापक दृष्टि। स्मारिका–उपोष्ण कटिबंधीय और पहाड़ी क्षेत्रें में बागवानी के एकीकृत विकास पर राष्ट्रीय संगोष्ठी, केन्द्रीय बागवानी संस्थान, मेड्जीफेमा, नागालैण्ड द्वारा बागवानी अनुसंधान स्टेशन, कायकुची, गुवाहाटी, असम में 17 फरवरी 2016 को आयोजित।
- श्रीवास्तव, ए.के (2016). भारतीय नीबूवर्गीय फल उद्योग के बेहतर परिप्रेक्ष्य के लिए उपयुक्तता मानदंड का विकास, ए.आई.सी.आर.पी.(फल) की समूह चर्चा, 3–6 मार्च 2016, भा.कृ.अनु.प – ए.आई.सी.आर.पी.(फल) और पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना द्वारा आयोजित।

वैज्ञानिकों द्वारा, सम्मेलनों/कार्यशाला/संगोष्ठियों/बैठकों इत्यादि में सहभागिता

- डा.आर.ए.मराठे, प्रधान वैज्ञानिक (एस.एस.एस.पी): साइंस एक्सपो–2016, रमन विज्ञान केन्द्र, नागपुर में 11 जनवरी, 2016 को आयोजित।
- डा. आई.पी.सिंह, प्रधान वैज्ञानिक (उद्यान): नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक (न.रा.का.स), रेलवे क्लब, नागपुर में 19 जनवरी 2016 को आयोजित।
- डा. एम.एस.लदानिया, निदेशक कुलपति/निदेशकों का सम्मेलन बैठक, भा.कृ.अनु.प. नई दिल्ली में 23–24 जनवरी 2016 को आयोजित।
- डा.ए.ए.मुरकुटे, : विभिन्न योजनाओं के तहत प्रस्ताव पर विचार के लिए राज्य कर्मचारी समिति की पूना में 29 जनवरी 2016 को आयोजित बैठक।
- डा. एम. एस. लदानिया, निदेशकः नीबूवर्गीय फलों के शून्य अपशिष्ट प्रसंस्करण एवं उनके स्वजीवन विस्तार हेतु उपयुक्त अनुसंधान एवं विकास प्रस्ताव के लिए इंटरैक्टिव बैठक, 1 फरवरी, 2016 को नई दिल्ली में आयोजित।
- डा. एम.एस.लदानिया, निदेशकः टी.एम.सी. प्रोग्राम का परभणी, बदनापुर, औरंगाबाद में आयोजन तथा टी.एम.सी. समन्वयक, एवं वैज्ञानिको के साथ चर्चा, 5–10 फरवरी 2016।
- डा. सी.एन.राव, प्रधान वैज्ञानिक (कीट विज्ञान): भा.कृ.अनु.प – ए.आई.सी. आर.पी.(फल) के वैज्ञानिकों के साथ भा.कृ.अनु.प – आई.आई.एच आर, बंगलुरू में 8–9 फरवरी, 2016 को सामूहिक बैठक के पूर्व चर्चा।
- डा. सी.एन.राव, प्रधान वैज्ञानिक (कीट विज्ञान), ओ.आर.पी.–चुषक कीट की वार्षिक समीक्षा बैठक, भा.कृ.अनु.प–आई.आई.एच.आर. बंगलुरू, 13–14 फरवरी, 2016।
- डा. ए.के.दास, प्रधान वैज्ञानिक (पौधरोग) मुख्य फसलों में एकीकृत कीट प्रबंधन हेतु विचार–मंथन, नास कॉम्पलेक्स, नई दिल्ली, 16–17 फरवरी 2016.
- डा. सी.एन.राव, प्रधान वैज्ञानिक (कीट विज्ञान) वर्ष 2015–16 तथा 2016–17 के लिए हॉर्टसॅप परियोजना की संचालन समिति की बैठक, कृषि आयुक्तालय पूना, महाराष्ट्र, 23 फरवरी 2016
- डा. आई.पी.सिंह, प्रधान वैज्ञानिक (उद्यानिकी) पी.पी.वी. एवं एफ.आर.ए. की 10 वी डी.यू.एस. समीक्षा बैठक, भारत सरकार, एम.पी. के वी. राहूरी, 26–17 फरवरी, 2016
- डा. ए.ए.मुरकुटे, वरिष्ठ वैज्ञानिक (उद्यानिकी) एम.जी.एम.जी. उपक्रम के नोडल अधिकारियों के साथ परस्पर विचार, भा.कृ.अनु.प.–ए.टी.ए.आर. आई. हैद्राबाद, 28 मार्च 2016,
- डा. किरण भगत. वैज्ञानिक (पादप कार्यिकी): जलवायु परिवर्तन के कारण जैविक एवं अजैविक तनाव के विरूध्द प्रक्षेत्र फसलों के प्रजनन पर राष्ट्रीय संगाष्ठी वी.एन.एम.के.वी. परभणी, 28–29 मार्च, 2016
- डा. अशोक कुमार, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारीः हॉर्टसॅप बैठक, एस.ए.ओ. कार्यालय, नागपुर, 5 मार्च, 2016

ए.आई.सी.आर.पी. (नीबूवर्गीय फल)

- केन्द्रीय नीबूवर्गीय फल अनुसंधान संस्थान नागपुर, ए.आई.सी.आर.पी. (फल) के अन्तर्गत नीबूवर्गीय फलों पर अनुसंधान की समन्वय की जिम्मेदारियों को बखूबी निभा रहा है। विभिन्न केन्द्रों, लुधियाना, श्री गंगानगर, अकोला, राहूरी, तिरूपति, पेरियाकुलम, चेथल्ली, तीनसुकिया और पासीघाट के तकनीकी कार्यक्रम अनुसंधान कार्य की देखरेख निदेशक, के.नि.फ.अनु.सं. नागपुर के द्वारा की जाती है। विगत तिमाही के दौरान निम्नलिखित गतिविधियाँ थी।
- डा. एम.एस.लदानिया, निदेशक और डा. सी.एन.राव, प्रधान वैज्ञानिक (कीट विज्ञान) एवं नोडल अधिकारी ने नीबूवर्गीय फलों की ए.आर.सी.आर. पी. केन्द्र राहूरी का 27–28 जनवरी 2016 को गतिविधियों की समीक्ष हेतु दौरा किया।
- डा. एम. एस. लदानिया, निदेशक, डा. ए. के. श्रीवास्तव, प्रधान वैज्ञानिक

डॉ. एम. एस. लदानिया, निदेशक एवं संयोजक (नीबूवर्गीय फल) अ.भा.सं.अनु.प. राहुरी की बैठक को संबोधित एवं उद्यान का भ्रमण करते हुए

(मृ.वि.), डा.आई.पी.सिंह, प्र.वै. (बागवानी), डा.पी.एस. शिरगुरे, प्रधान वैज्ञानिक (एस.डब्लू.सी.ई.), डा. सी.एन.राव, प्रधान वैज्ञानिक (कीट विज्ञान) ने भा.कृ.अनु.प.–ए.आई.सी.आर.पी.(फल) की तीसरी समूह चर्चा में 3 से 6 मार्च 2016 को पी.ए.यू. लुधीयाना में भाग लिया। इस दौरान किये गए अनुसंधान कार्यक्रम पर चर्चा हुई।

अन्य प्रसार गतिविधियाँ

- संस्थान, टी.एम.सी. के साथ मिलकर निम्नलिखित कृषि प्रदर्शनी में भाग लेकर अपनी प्रौद्योगिकियों का प्रदर्शन एवं प्रकाशन की बिक्री के माध्यम से प्रचारित किया
- रमन विज्ञान केन्द्र एवं तारामंडल, नागपुर मे आयोजित 5 वी साइंस एक्सपो, (1 से 13 जनवरी, 2016)
- युवाओं के सशक्तिकरण का शिखर सम्मेलन, नागपुर फोरचुन फाउनडेसन द्वारा आयेजित (30 जानेवारी से 1 फरवरी 2016)
- उद्योगों, नवीन आविष्कारों, उद्यमियों, फैसिलिटेटर्स और शिक्षा सम्मेलन (आई.आई.एफ.ए.) 2016, वी.एन.आई.टी. नागपुर आई. आई. एफ. ए. अखिल भारतीय सम्मेलन द्वारा आयोजित (5 से 7 फरवरी, 2016)

माननीय श्री नितीन गडकरी, कैबिनेट मंत्री सड़क परिवहन, राजमार्ग एवं जहाज रानी ने संस्थान के स्टाल का दौरा किया

- कृषि बायोसाइंस में नवोन्मेष पर राष्ट्रीय सम्मेलन में कृषि व्यवसाय प्रदर्शनी, डा.अम्बेडकर कॉलेज, नागपुर (26 से 27 फरवरी 2016)
- भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली, में कृषि उन्नति मेला (19 से 21 मार्च 2016). संस्थान ने नागपुर एवं अमरावती जिले से कुल 8 किसानो को मेले मे भाग लेने के लिए भेजा।

दूरदर्शन/आकाशवाणी प्रसारण

- विनोद अनाव्रत – ''संतरा पीक संरक्षण वेलापत्रक'' (नागपुरी संतरा पौधा संरक्षण कैलेंडर), आकाशवाणी, नागपुर, 5 फरवरी 2016.

संस्थान की कृषि उन्नति मेला आई ए. आर. आई., नई दिल्ली 19–21 मार्च 2016 मे सहभागिता

- ए.डी.हुच्चे –''नीबूवर्गीय फल बगीचों का प्रबंधन'' दूरदर्शन किसान, 29 फरवरी, 2016.
- आई.पी.सिंह – ''नागपुरी संतरे की रोग मुक्त पौधों का उत्पादन'' दूरदर्शन किसान चैनल, भारत सरकार नई दिल्ली.

सर्वेक्षण/नीबूवर्गीय फल उत्पादकों के बगीचों का दौरा

- डा.ए.डी.हुच्चे, प्रधान वैज्ञानिक (बागवानी), डा दिनेश कुमार, प्रधान वैज्ञानिक (बागवानी) और डा..के.दास, प्रधान वैज्ञानिक (पौधा रोग विज्ञान) ने नीबूवर्गीय फल बगीचा, झालावाड क्षेत्र, राजस्थान का 2 फरवरी, 2016 को दौरा किया जहॉं नागपुरी संतरे की खेती की समस्याओं पर चर्चा की गई।
- डा. ए.डी.हुच्चे, प्रधान वैज्ञानिक (बागवानी), डा. डी.के.घोष, प्रधान वैज्ञानिक, और डा. ए. ए. मुरकुटे, वरिष्ठ वैज्ञानिक (बागवानी), ने ओलावृष्टि, बारीश तथा हवा से हुई नुकसान का जायजा लेने हेतु 2–3 मार्च, 2016 को नागपुर ओर वर्धा जिले के नीबूवर्गीय फल बगीचों का सर्वेक्षण किया।
- डा. ए.डी. हुच्चे, प्रधान वैज्ञानिक (बागवानी), डा. ए.के. दास, प्रधान वैज्ञानिक (पादक रोग विज्ञान) और श्री. डी.ओ. गर्ग, एस.एम.एस. (कीट विज्ञान) ने 29 मार्च, 2016 को गजापति जिला, ओडिसा के नीबूवर्गीय फल बगीचों का सर्वेक्षण किया तथा उप निदेशक, बागवानी, गजापति जिला, ओडीसा सरकार के साथ आदिवासी किसानो के बगीचों में ड्रिप सिंचाई प्रणाली लगाने के लिए बैठक की।

संस्थान के वैज्ञानिको ने जिला गजपति ओडीसा के नीबूवर्गीय फलोद्यानों का सर्वेक्षण किया

संस्थान में दौरा

किसान

राज्य	किसानो की संख्या
महाराष्ट्र	74
मध्य प्रदेश	488
राजस्थान	57
ओडिसा	26
तेलंगाना	70
उत्तर प्रदेश	28
कर्नाटक	90
कुल	833

छात्र

- बागवानी महाविद्यालय सिरसी, बागवानी विश्वविद्यालय बागलकोट, कर्नाटक के 44 छात्र और 3 अध्यापकों ने 28 जनवरी 2016 को संस्थान का दौरा किया।
- सुश्री नलिनी जुवार के नेतृत्व मे विमलाताई तिडके कान्वेंट के 100 छात्रों ने 9 फरवरी, 2016 को संस्थान का दौरा किया।
- बागवानी महाविद्यालय, ए.ए.ए.यु. आनंद गुजरात के 26 छात्रों ने 13 फरवरी 2016 को संस्थान का दौरा किया।
- आर.टी.एम.यू. नागपुर को 14 छात्रों ने 14 फरवरी 2016 को संस्थान का दौरा किया।
- सितारा बागवानी महाविद्यालय, कोलार (यू.एच.एस.) बागलकोट के 60 छात्रों ने 11 मार्च, 2016 को संस्थान का दौरा किया।

अधिकारी/प्रशिणार्थी

- 6 ए.आर.एस. प्रशिणार्थीयो को आई.सी.ए.आर.–सी.सी.आर.आई. से 23 फरवरी, 2016 को संस्थान में प्रशिक्षण दिया गया।
- केन्द्रीय समेकित कीट प्रबंध के 33 प्रशिणार्थी को 3 मार्च 2016 को प्रशिक्षण दिया गया।
- 12 प्रशिणार्थी को एन.बी.एस.एस. एवं एल यू.पी. नागपुर में मृदा संरक्षण एवं भूमापन में 30 मार्च, 2016 को प्रशिक्षण दिया गया।
- रामेती, कृषि विभाग महाराष्ट्र शासन के 16 कृषि सेवक दिनांक 30 मार्च, 2016.

सुशासन : आधार कार्ड आधारित बायोमेट्रीक उपस्थिती प्रणाली के.नी.फ.अनु., नागपुर में 1 जनवरी, 2016 से लागू की गई।

के.नी.फ.अनु.सं. की नयी वेबसाईट : रा.नी.फ.अनु. केंद्र के के.नी.फ.अनु.सं. को प्रोन्नती के बाद 11 मार्च, 2016 को संस्थान की नयी वेबसाईट www.ccringp.org.in शुरू की गई। सभी महत्वपूर्ण गतिविधियाँ जैसे संस्थान द्वारा विकसित तकनिकीयाँ, संपूर्ण तकनीकी पैकेज के रूप में अनुसंधान प्रकल्प, प्रकाशन, संपर्क, परामर्श सेवायें फसल परामर्श, हेल्पलाईन इत्यादि. वेबसाईट पर दिये गये हैं

समारोह : के.नी.फ.अनु.सं. मे 26 जनवरी, 2016 को गणतंत्र दिवस एवं 31 जनवरी, 2016 को शहीद दिवस मनाया गया।

संस्थान के निदेशक, डॉ एम एस लदानिया नई वेबसाईट का विमोचन करते हुए

संस्थान के निदेशक डॉ. एम. एस. लदानिया 26 जनवरी 2016 को झंडारोहण करते हुए

नीबूवर्गीय फलों पर विदर्भ, मराठवाड़ा एवं छिंदवाड़ा के लिए प्रौद्योगिकी मिशन

विदर्भ, मराठवाडा एवं छिंदवाडा के लिए प्रौद्योगिकी मिशन की शुरुवात 2007 में राष्ट्रीय बागवानी मिशन (आज का समेकित बागवानी विकास मिशन), कृषि मंत्रालय भारत सरकार नई दिल्ली द्वारा की गई। इसका मुख्य उद्देश्य रोग रहित पौधों को उत्पादन, मानव संसाधन विकास, तकनीकी प्रदर्शन और किसान मेला/प्रदर्शनी इस तिमाही में की गई गतिविधियाँ निम्न प्रकार से हैं।

संतरा उत्पादकों का प्रशिक्षण

इस तिमाही में विदर्भ, मराठवाड़ा एवं छिंदवाडा में क्रमशः 9,6,2 प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया जिसमें क्रमशः 1299, 907 व 178 संतरा उत्पादक सहभागी हुए।

दिनांक 12 फरवरी, 2016 के सुरवडा एवं 19 मार्च 2016 को सुसुन्द्री के नीबूवर्गीय फलोत्पादकों का प्रशिक्षण
(नीबूवर्गीय फलों पर तकनीकी मिशन-विदर्भ)

राजनगाँव, औरंगाबाद में 17 फरवरी 2016 को किसान मेला (टी. एम. सी., मराठवाडा)

बोरगांव, पांडुरना में प्रशिक्षण (टी. एम. सी., छिंदवाड़ा)

- **अधिकारियों के लिए प्रशिक्षण :** कौशल्य विकास एवं पौधशाला, उत्पादन कायाकल्प एवं सस्योत्तर प्राद्यौगिकी ज्ञानार्जन के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिये गये इस तिमाही मे विदर्भ, मराठवाडा एवं छिंदवाडा में क्रमशः 2,3 और 2 प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। जिसमें क्रमशः 34,28 एवं 37 अधिकारी शामिल हुए।

डॉ. एम.एस. लदानिया, मिशन लीडर, टी.एम.सी प्रशिक्षुओं को प्रमाणपत्र वितरित करते हुए

डॉ. एम. एस. लदानिया मिशन लीडर टी.एम.सी., परभनी के अधिकारियों को 6 फरवरी 2016 को संबोधित करते हुए

डॉ. अनुप कुमार सोनी डी.ओ. मंदसोर टी.एम.सी. छिंदवाड़ा में 22 जनवरी 2016 को अपने अनुभव बताते हुए

प्रौद्योगिकी प्रदर्शन

इस तिमाही में नीबूवर्गीय फल प्रौद्योगिकी मिशन के अंतर्गत 21 (12 सी.सी.आर.आई. प्रौद्योगिकी, 9 कायाकल्प प्रौद्योगिकी), 16 (7 प्रौद्याागिकी, 9 कायाकल्प प्रौद्योगिकी) और 16 (9 सी.सी.आर.आई. प्रौद्योगिकी, 7 कायाकल्प प्रौद्योगिकी) क्रमशः विदर्भ, मराठवाडा एवं छिंदवाड़ा में आयोजित किया गया।

कार्मिक

नियुक्तीयाॅं

- श्रीमती स्नेहल वैद्य, यंग प्रोफेशनल–2 के पद पर 9 फरवरी, 2016 से कार्यरत है।
- कु. सचिना रॉय, प्रक्षेत्र सहायक के पद पर 16 फरवरी, 2016 से कार्यरत है।
- श्रीमती प्रियंका शास्त्रकार, प्रयोगशाला सहायक के पद पर 25 फरवरी, 2016 से कार्यरत है।
- कु. रेणुका मोगरकर, जे.आर.एफ. के पद पर 31 फरवरी, 2016 से कार्यरत है।

कार्यमुक्ती

- श्रीमती प्राची सावन, प्रयोगशाला सहायक के पद पर 5 फरवरी, 2016 से कार्यमुक्त किया गया है।
- श्रीमती प्रार्थना डी. जिभकाटे, यंग प्रोफेशनल–2 के पर पर 8 फरवरी, 2016 से कार्यमुक्त किया है।
- श्री. सचिन मेंडके, जे.आर.एफ. के पर पद 27 फरवरी, 2016 से कार्यमुक्त है।

सुझाव/प्रति सूचनाएं–

नीबूवर्गीय फल उत्पादन में कटाई–छँटाई एवं छिड़काव के लिए यांत्रिकीकरण /स्वचालन अब यह हकीकत हो गई है यद्यपि इसका उपयोग बड़े पैमाने पर होना बाकी है। आज मशीनों की कीमतें मुख्य बाधा है फिर भी आने वाले समय में इसकी अधिक मांग होने के कारण कीमतें कम होंगी और यह उपयुक्त साबित होगी। नीबूवर्गीय फल बगीचों में सामूहिक खेती की परिकल्पना इन मशीनों को किसानो के लिए उचित दामों पर उपलब्ध कराने मे सहायक होगी। भा.कृ.अनु.प.–केंद्रीय नीबूवर्गीय फल अनुसंधान संस्थान, नागपुर मे 60 एच पी. ट्रॅक्टर आधारित छटाई मशीन (एफ एम पी 600 पी, बी एम व्ही, इटली निर्मित) हेजिंग, टॉपींग एवं स्कर्टिंग कार्य का संचालन एक ही समय पर कर सकती है। नागपुरी संतरे के बड़े पेड़ों की डिस्क के साथ 1.25 एकड़ प्रति घंटा के दर से छँटाई करती है। प्रारंभिक चलन से यह दिखता है की यह मशीन मानवीय छँटाई के अनुपात मे 75% समय एवं 55% लागत मूल्य से बचत करता है। इसकी उँचाई (हेजिंग) एवं चौड़ाई (टॉपींग) का घेरा 6 और 4 मिटर का रहता है उससे बडे पेड़ो की छँटाई आसानी से हो जाती है। ट्रॅक्टर से चलनेवाले इलक्ट्रोस्टॅटिक एवम एअर ब्लास्ट स्प्रेअर 600 लीटर टंकी की क्षमता के साथ कम समय मे अधिक क्षेत्र पर छिड़काव कर सकती है। नोझल एवं छिड़काव के लिये दबाव को पेड़ के छत्र के आवश्यकतानुसार समायोजित कर सकते है। नागपुर जिले के कळमेश्वर तहसील में वर्ष 2016 में इन मशीनों का 10 संतरा उत्पादकों के बगीचों मे प्रदर्शन किया गया। छंटाई से संतरा वृक्ष में अधिक विकास एवं फलन होता है। कटाई–छँटाई के तुरंत बाद फफूंद–नाशक का छिड़काव आवश्यक है। इस यांत्रिकीकरण और स्वचालन से कुछ ही मजदुरो के साथ कम समय मे अधिक बगीचों का व्यवस्थापन संभव है।

सम्पादनकर्ता : डॉ. एम.एस. लदानिया, निदेशक; डॉ. आर. के. सोनकर, प्रधान वैज्ञानिक (बागवानी); डॉ. आशुतोष मुरकुटे, वरिष्ठ वैज्ञानिक (बागवानी) एवं डॉ. अशोक कुमार, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी (पौधारोग विज्ञान)
प्रकाशक : डॉ. एम.एस. लदानिया, निदेशक, सी.सी.आर.आई., नागपुर – 440033, महाराष्ट्र
नीबूवर्गीय फल समाचार पत्र, केन्द्रीय नीबूवर्गीय फल अनुसंधान संस्थान का अधिकारिक समाचार पत्र है
डाक पता : पो.बाक्स न. 464, शंकर नगर, पोस्ट ऑफिस, अमरावती रोड़, नागपुर–440010 (महाराष्ट्र)
फोन न. : 0712–2500249, 2500615, 2400813 **फैक्स :** 0712–2500813
वेबसाइट: www.ccringp.org.in **ईमेल** :citrus8_ngp@sancharnet.in, director.ccri@icar.gov.in, dirnrccngp@gmail.com
मुद्रित : एस्केस् स्केना ग्राफिक, गुजरवाड़ी, नागपुर